प्रातः क्लास Geeta ओमशान्ति ~~शिवजयन्ती~~ 8-2-68

ओमशान्ति। यूं सतगुरु वार तो बच्चों के लिए रोज़ ही है। यह तो सिर्फ दिनों के नाम रखे गये हैं। नहीं तो वृक्षपति जिसको बृहस्पत की दशा कहते हैं वह ब्राहमण बच्चों पर तो है ही। वह दशा हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार।

आजकल बच्चे शिव जयन्ति मनाने के लिए डायरेक्शन माँगते हैं, कार्ड छपवाते हैं उस में क्या लिखें। कई तो आपे ही लिखते हैं। जो पूरा नहीं जानते लिखना वह पूछते हैं कि कैसे कार्ड छपवायें बांटे जायें। बाप ने समझाया तो बहुत वारी है, सारी मुख्य बात है गीता पर। मनुष्यों की बनाई हुई गीता से तो आधा कल्प पढ़ते 2 दुर्गति को पाया है। यह भी तुम बच्चे ही समझते हो। दूसरा कोई समझते नहीं कि इससे दुर्गति को पाया है। बच्चों को समझाया है गीतायें है दो। ज्ञान और भक्ति। आधा कल्प है भक्ति की गीता,। आधा कल्प दिन, आधा कल्प रात। अभी बाबा ऐसे ऐसे देते हैं उनको शार्ट कर लिखना पड़ें। भाईयों और बहिनों आकर समझो। एक गीता शास्त्र है ज्ञान का। और बाकी सभी शास्त्र हैं भक्ति मार्ग के। ज्ञान का शास्त्र एक ही है। जो पुरुषोत्तम संगम युग पर बेहद का बाप परमपिता परमात्मा त्रिमूर्ति शिव सुनाते हैं। या तो लिखना चाहिए ब्रहमा द्वारा सुनाये रहे हैं जिससे 21 जन्म सदगति होती है। बाकी हैं दुर्गति के शास्त्र। ज्ञान की गीता से 21 जन्म सदगति मिलती है। फिर 63 जन्म भक्ति की गीता चलती है जो कि मनुष्यों की बनाई हुई है। बाप तो राजयेग सिखला कर सदगति करते हैं। फिर सुनने की दरकार ही नहीं रहती। मनुष्यों की बनाई हुई गीता तो द्वापर से पढ़ते ही आते हैं। सदगति है दिन। दुर्गति है रात। दुर्गति होते होते बिलकुल घोर अंधियारा हो जाता है। वह ज्ञान की गीता, वह भक्ति की गीता। वह सुनाते हैं परमपिता परमात्मा त्रि त्रिमूर्ति शिव ज्ञान सागर। और वह भक्ति की गीता सुनाते हैं जो भक्ति के सागर हैं। भक्ति मार्ग की गीता मनुष्य सुनाते हैं। अभी भी बनाते रहते हैं। बहुत गीतायें हैं। वह हैं भक्ति मार्ग के दुर्गति के अर्थात रात की। यह ज्ञान की गीता जिससे दिन होता है। ज्ञान गीता एक ही ज्ञान सागर सुनाते हैं। जिससे 21 जन्म सदगति होती है। अथवा 100% पवित्रता-सुख, शान्ति का अटल, अखण्ड सतयुगी दैवी स्वराज्य मिलता है 21 जन्म लिए अर्थात चढ़ती कला होती है। मनुष्यों की भक्ति की गीता से उतरती कला होती है। भक्ति के गीता और ज्ञान की गीता। इस पर अच्छी तरह से विचार सागर मथन कर लिखना पड़े। यही मूल बात है जो मनुष्य नहीं जानते हैं। और तुम लिखते भी हो त्रिमूर्ति शिवजयन्ति सो श्री मदभगवद गीता जयन्ति सो सर्व की सदगति भवन्ति। यह भी लिख सकते हो। 32वीं शिवजयन्ति, विश्व में शान्ति भवन्ति। मुख्य 2 अक्षर बहुत जरूरी है। जिस पर ही सारा मदार है। वह हैं मनुष्यों की भक्ति मार्ग की गीता, जो कि द्वापर से कलियुग तक अध्ययन किया जाता है। जिससे पतन होता है। ऐसा क्लीयर लिखना चाहिए जो मनुष्य झट समझ जावें। है ही गीता से उत्थान और पतन। भक्ति मार्ग की भी सर्व शास्त्र मई सिरोमणी गीता है और ज्ञान मार्ग की भी सर्व शास्त्रमई गीता है। और कोई भी शास्त्र ज्ञान मार्ग के होते नहीं। वह सब हैं भक्ति मार्ग के। गीता वेद शास्त्र आदि जो भी हैं मनुष्यों की बनाई हुई है। उससे दुर्गति ही होती आई है। और पुरुषोत्तम संगम युग पर जो बाप राजयोग और ज्ञान सिखलाते हैं उससे 21 जन्म बेहद का अटल, अखण्ड... अब यह लिख कर रिफाईन करने में भी टाईम लगता है। फिर नीचे में लिखना चाहिए निवृति मार्ग वाले सन्यासी कब राजयोग सिखलाये न सके। यह दूसरी पाईन्ट है। जो कनेक्शन रखती है। हठयोगी सन्यासी शास्त्रों आदि से सदगति कर नहीं सकते। गीता वेद, शास्त्र उपनिषद आदि जो भी है उससे दुर्गति होती है। अब यह लिखते बनाने में भी कम से कम 2-3 घंटा मेहनत करनी पड़ें। और यह भी लिख सकते हो सदगति एक ही गीता का भगवान कर सकते हैं। मनुष्य मनुष्य की सदगति कर नहीं सकते। भगवान सदगति करने आते भी हैं पुरुषोत्तम संगम युग पर। अभी कर रहे हैं। यह मुख्य दो तीन पाईन्ट डाले तो भी बहुत है। शिव और कृष्ण की गीता का कान्ट्रास्ट तो हैं। त्रिमूर्ति का चित्र भी हो। त्रिमूर्ति का चित्र कार्ड में लगा देना चाहिए। अगर ब्लाक न है तो ऐसे ही लिखदेना चाहिए।

*/का चित्रभी हो। त्रिमूर्ति का चित्र कार्ड में लगा देना चाहिए। अगर ब्लॉक न है तो ऐसे ही लिख देना चाहिए। त्रिमूर्ति शिव भगवान से संगम पर गीता सुनने सेसदगति होती है। कृष्ण तो सुनाई नहीं है। ऐसे2 पाईन्ट पर जब कोई विचार सागर मथन करे तब ही लिख सके। मनुष्य मनुष्य की सदगति कदाचित नहीं कर सकते हैं। सिर्फ एक ही त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव जो कि टीचर भी है गुरु भी है अब इस पुरुषोत्तम संगम युग पर सर्व की सदगति कर रहे हैं। कार्ड में थोड़ी लिखते ही बस है। उपर में लिख देना चाहिए "कलियुगी कौड़ी जैसेपतित मनुष्य से सतयुगी हीरे जैसा पावन देवता बनने का ईश्वरीय निमंत्रण।" ऐसे2 लिखने से मनुष्य खुशी से आवेंगे समझने लिए। सदगति दाता बाप की शिवजयन्ति मनाई जाती है। एकदम क्लोयर अक्षरों में हो और तन्त। मनुष्य तो भक्ति मार्ग के कितने ढेर शास्त्र पढ़ते हैं, माथा मारते रहते हैं। यहां तुमकोसेकन्ड में बेहद के बाप से जीवनमुक्ति मिलती है। जो बाप का बन और उससे नालेज लेते हैं उनको जीवनमुक्ति जरूर मिलेगी। मुक्ति में जाकर जब फिर समय आवेगा, जैसा2 पुरुषार्थ किया होगा ऐसे ही जीवनमुक्ति में आवेंगे। जीवनमुक्ति तो जरूर मिलती है। शुरु में आवे वा पिछाड़ी में आवे तो भी जीवनमुक्ति जरूर मिलती है। पहले जीवनमुक्ति फिर जीवन-बन्धन। तो ऐसे 2 बातें अगर धारण कर ले तो भी बहुत सर्विस हो सकती है।

कोई2को निमंत्रण बहुत अच्छा मिलता है, बच्चियां लिखती हैं आप हमको बहुत अच्छा रिफ्रेश कर के गई हो फिर आकर रिफ्रेश करो,। बुलावा होता है फिर भी अगर न जाये तो उनको कहा जाता है महान कमबख्त। सर्विस तो करनी चाहिए ना। सर्विस नहीं करते तो कमबख्त नही कहेंगे। ऊंच दर्जा पाना है तो कुछ समझ धारण करनी चाहिए। एकदम बेसमझ नहीं बनना है। जाकर बहुतों का कल्याण करना चाहिए। बाकी सारा दिन खाते-पीते, सोते तो जनावर भी हैं। इस समय बाप आकर जनावर से देवता बनाते हैं। अगर बेहद के बाप को न जाने तो उनको जनावर ही कहेंगे। जनावर से भी बदतर कहा जाता है। अगर बाप को जानते हैं तो दूसरों को भी परिचय देना चाहिए। किसको परिचय नहीं देते हैं तो ज्ञान ही नहीं है। जैसे जनावर मिशल है। समझानी तो बहुत दी जाती हैं परन्तु तकदीर में नहीं है। कल्याण कारी बाप के बच्चे हैं तो कल्याण करना चाहिए ना। नहीं तो बाप भी कहेंगे यह तो कहने मात्र कहते हैं कि हम शिव बाबा के बच्चे हैं। कल्याण तो करते नहीं। शाहुकार या गरीब कल्याण तो सब का करना है ना। परन्तु पहले गरीब ही उठावेंगे। उन्हों को फुर्सत है। ड्रामा में पार्ट ही ऐसा बना हुआ है। शाहुकार अभी आ जाये तो उनके पिछाड़ी ढेर आ जायें। देखेंगे यह भी कहते हैं गीता का भगवान निराकार भगवान शिव है न कि श्रीकृष्ण। एक भगवान ही सदगति दाता है। तो फिर आकर पूंछ लटकावेंगे। अभी ही अगर महिमा निकलेगी तो पता नहीं क्या हो जाये बात मत पूछो। तुम तो सन्यासियों बड़े2 मर्तबे वालों को हिलाते हो। क्यों कि तुम्हारी हैं ईश्वरीय मर्तबा। उन्हों का मर्तबा क्या है कुछ भी नहीं। जो अच्छी रीत समझते हैं वह अपना भी तो दूसरों का भी कल्याण करते हैं। जो अपना ही कल्याण नहीं करते तो दूसरों का कदाचित नहीं कर सकते। बाप तो अच्छी रीत समझाते हैंपरन्तु कोई को यह रत्न भी मिर्ची हो लगती है। बाप है कल्याण कारी, सर्व की सदगति दाता। तुम भी मददगार हो ना। अभी तुम समझते हो वह है भक्ति मार्ग की दशा। सदगति मार्ग की दशा एक ही है। वह महारथी कहेंगे। अपने दिल से पूछना चाहिए हम महारथी हैं, प्लाने मिशल सर्विस करते हैं, क्योंकि कब किसको ज्ञान सुनाये न सकें। कोई का कल्याण ही नहीं करते तो कल्याण कारी बाप के बच्चा क्यों कहलाना चाहिए। बाप तो पुरुषार्थ करावेंगे ना। ठंढा थोड़े ही छोड़ेंगे। नहीं तो और डिस सर्विस करेंगे। यज्ञ की सर्विस में तो हड्डियां भी स्वाहा कर देनी चाहिए। बाकी सिर्फ खाना-पीना, सोना वह सर्विस हुई क्या। समझना चाहिए हम जाये प्रजा में या राजाई में दास-दासी बनेंगे। बाप तो कहते हैं पुरुषार्थ कर नर से नारायण बनो। सपुत

बच्चों को देख बाप भी खुश होंगे ना। यह तो बड़ा सपुत बच्चा है। लौकिक बाप भी देखते हैं यह तो बड़ा भर्तवा पाने लायक है तो देख कर खुश होंगे। पारलौकिक बाप भी ऐसे ही कहते हैं। बाप बच्चों को अगर न सुधारे तो कहेंगे ना तुम्हारा तो कोई धणी-धोनी हुवा नहीं। बेहद का बाप कहते हैं हम तो तुमको विश्व का मालिक बनाने आये हैं। अब तुम औरों को भी बनाओ। बाकी सिर्फ पेट की पूजा करने से फायदा ही क्या होगा। सिर्फ यह बताओ शिव बाबा को याद करो। भोजन पर भी एक दो को शिव बाबा की याद दिलाते रहेंगे तो सभी कहेंगे इनको तो शिव बाबा से बहुत ही प्रीत है। यह तो सहज है ना। इसमें क्या नुकसान है। टेव पड़ जावेगी तो खाते भी रहेंगे: अध्ययन भी करते रहेंगे। दैवीगुण धारण करना चाहिए ना। बाप, टीचर गुरु का काम है शिक्षा देना। और तो कुछ भी नहीं करते। गायन भी है भारी चाहे प्यार करो . . . शिव बाबा इस तन से ही कहेंगे ना। वह तो है गुप्त। इनका भी अदब रखना पड़े ना। इस समय हैं कलियुगी पतित कौड़ी मिशल दुर्गति को पाये हुये हैं। सभी पुकारते भी हैं हे पतित-पावन आओ। तो जरूर पतित हैं ना। शंकराचार्य भी शिव की पूजा करते हैं क्योंकि वही पतित-पावन है। आधा कल्प भक्ति करते हैं फिर भगवान आते हैं। कोई को हिसाब का थोड़े ही पता है। बाप समझाते हैं भक्ति है दुर्गति। यज्ञ तप-दान आद करने से मैं नहीं मिलता हूं। इसमें गीता भी आ जाती है। इन शास्त्रों पढ़ने से कोई को सदगति नहीं होती है। गीता, वेद-उपनिषद आद सब हैं भक्ति मार्ग के। बाप तो सदगति के लिए बच्चों को सहज राजयोग और ज्ञान सिखलाते हैं। जिससे राजाई प्राप्त कराते हैं। इनका नाम ही है राजयोग। मनुष्य से देवता बनाते हैं। इसमें पुस्तक आद की बात नहीं। टीचर स्टडी कराते हैं। पद प्राप्त कराने लिए। तो पक्का करना चाहिए ना। सबको बोलो शिव बाबा को याद करो। वह हम सभी आत्माओं का बाप है। शिव बाबा को याद करने से विकर्म विनाश होंगे। एक दो को सावधान कर उन्नति को पाना है। जितना याद करेंगे उतना अपना कल्याण है। याद की यात्रा ही सारी विश्व को पवित्र बनायेगी। याद में रहे भोजन बनाओ। तो उसमें भी ताकत आ जावेगी। इसलिए तुम्हारी ब्रह्मा भोजन की महिमा है। ऐसा भोजन शायद पिछाड़ी में मिलेगा। जैसे बाबा कहते हैं शिव बाबा को याद कर भोजन बनाओ। वह भक्त लोग भोजन बनाते हैं तो भी राम राम कहते रहते हैं। राम-नाम का दान देते हैं। तुमको तो बुधि में यह घड़ी2 याद रहनी चाहिए। बुधि में सारा ज्ञान याद रहना चाहिए। बाप के पास सारी रचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान है ना। ऊंच ते ऊंच भगवान। उनको याद करेंगे तो ऊंच पद पावेंगे। फिर दूसरे किसको याद ही क्यों करें। बाप कहते हैं मुझे याद करो। तो दूसरी सब छोड़ने पड़ें। यह हैं अव्यभिचारी योग। बाप ने समझाया है अगर याद नहीं पड़ती है तो गांठ बांध लो। अपनी उन्नति करने लिए, ऊंच पद पाने लिए पुरुषार्थ जरूर करना है। टीचर है एक। हमको भी टीचर बनाने वाला शिव बाबा। तुम पण्डे हो ना। पण्डों का काम है रास्ता बताना। नहीं तो पण्डे नहीं लुण्डे ठहरे। उनको ब्राह्मण भी नहीं कहेंगे। शुद्र के शुद्र ही ठहरे। इतना सारा ज्ञान पहले थोड़े ही तुम्हारे में था। ऐसे बहुत कहते हैं आगे तो जैसे पाई पैसे की पढ़ाई थी। सो तो जरूर होगा ना। ड्रामा अनुसार कल्प पहले मिशल पढ़ते रहते हैं। फिर कल्प बाद भी ऐसे ही पढ़ेंगे। रोज़ बाबा समझाते रहते हैं। परन्तु अगर छेद होगा तो सभी बह जावेंगे। जरा भी दान न दे सकेंगे। निमंत्रण आता है तो फौरन भागना चाहिए। इसमें तो पूछना भी नहीं चाहिए। परन्तु तकदीर ही में न है तो क्या कर सकते हैं। पिछाड़ी में सब तुमको सा० होंगे। सा० होने में देरी थोड़े ही लगती है। बाबा को भी पट्टे से सा० होते गये फलाना राजा बनेगा यह ड्रेस होगा। शुरू में बहुत सा० होते थे। फिर पिछाड़ी में बहुत होंगे। फिर याद करेंगे। बाबा भी कहेंगे तुमको कितना समझाते थे। है तो ड्रामा। फिर भी सावधान किया जाता है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को नमस्ते।